जैन कन्या पाठशाला (स्नातकोत्तर) महाविद्यालय

डॉ अनामिका जैन
सहायक आचार्य
हिन्दी विभाग

तृतीय प्रश्न पत्र
विशिष्ट रचनाकार : प्रेमचंद
एम ए (प्रथम वर्ष)
द्वितीय सेमेस्टर

ठाकुर का कुआँ (प्रेमचंद)

सन् 1932 में प्रकाश में आई प्रेमचंद की कहानी 'ठाकुर का कुआँ' अपने छोटे से कलेवर में बड़ी बात कहती नजर आती है। कहानी ग्रामीण परिवेश मं उबरे जात-पात और ऊँच-नीच के बीच भेद को उजागर करती है। कहानी में दलित जोखू और उसकी पत्नी गंगी मुख्य पात्र है। दलित जोखू दूषित पानी पीने को मजबूर है। जबकि पत्नी उसे वह पानी नहीं पीने देती और हट करके ठाकुर के कूएँ से पानी लेने जाती है।

डरी हुई गंगी जैसे ही कुएँ से पानी निकालने लगती है और पानी का घड़ा भरकर कुएँ के ऊपर तक आ जाता है तो ठाकुर का दरवाजा खुलता है जिससे गंगी के हाथ से रस्सी छूट जाती है और घड़ा फूट जाता है। घड़ा गिरते ही वह वहाँ ले दौड़ी घर को आती है तथा जोखू को दूषित पानी पीते देख उसे रोक नहीं पाती है।

दलित विमर्श को लेकर प्रेमचंद की कहानी 1930 में प्रकाशित सद्गति भी है। इनके आलावा भी हिंदी में दलित विमर्श को लेकर बहुत सारी कहानियाँ प्रकाश में आई हैं ओम प्रकाश बाल्मीकि की काहनी अम्मा, यह अंत नहीं, खानाबदोश। ज्ञानरंजन की कहानी मनु आदि।

प्रेमचंद ग्रामीण परिवेश पर कहानी लिखने वाले रचनाकार रहे हैं उनका मूल उद्देश्य ग्रामिणों की समस्याओं को सभी के सामने लाना रहा है। कहानी में बहुत से बिंदुओं पर विचार किया गया है, जो इस प्रकार है-

1. जातिगत भेदभाव।
2. निम्न वर्ग और उच्च वर्ग का भेद।
3. समाज में असमानता को दिखाना।
4. कृषक या मजदूर की दशा।
5. आर्थिक विपन्नता।
6. जमींदारी प्रथा।

धन्यवाद